विषय सूची

भूमिका	...	xi
चाय के प्याले से शिक्षा	...	xiii
जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने की चेतना	...	1
स्वेच्छा – दैनिक जीवन का आधार	...	7
स्वेच्छा का सिद्धांत – व्यवहार में	...	11
स्वेच्छा का महत्व – सिद्धांत रूप में	...	15
क्या वास्तव में तुम कर्ता हो?	...	23
अकर्ता होना प्रयासरहित प्रयास करना है	...	29
जीवन का उद्देश्य	...	37
सम्राट सिकंदर रास्ता दिखाता है	...	45
भगवान बुद्ध की ज्ञान रूपी तलवार	...	53
मन की शांति का आधार	...	61
तलवार ने आर्थर को राजा चुना	...	69
जीवन का सार	...	79
जीवन – एक नया नज़रिया	...	91
समापन	...	95
सदियों से गूँजता संदेश	...	99
आभार	...	107

भूमिका

मुझे वह दिन याद है जब नौ वर्ष पहले मैं गौतम सचदेव को मिला था। मैं उनके भव्य व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ और साथ ही उनकी विनम्रता ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया। वह एक सफ़ल व्यवसायी हैं जिन्होंने युवावस्था में ही लगभग शून्य से अपना व्यवसाय आरंभ किया।

मैं इस बात से भी प्रभावित हुआ कि वह अद्वैत के सिद्धांत में सचमुच रुचि रखते थे और उन में अद्वैत के प्रति किसी सामान्य सफ़ल व्यवसायी वाला दृष्टिकोण नहीं था। मुझे एक किस्सा याद आ रहा है जब मेरा डाक्टर भतीजा मुझे एक अस्पताल में सामान्य जाँच के लिए ले गया। जब वरिष्ठ डाक्टर से मेरा परिचय 37 वर्ष से बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े एक ऐसे व्यक्ति के रूप में कराया गया जो अब अद्वैत वेदांत विषय पर भाषण देता है तो उनके मुँह से तुरंत निकला, ''ओह वेदांत, मैं तो अभी केवल 56 वर्ष का हूँ। मैं बुढ़ापे में इसके बारे में सोचूँगा।''

आरंभ के वर्षों में जब गौतम हर रविवार की सुबह मुझे मिलने आते थे तो मैने यह अनुभव किया कि उनकी इस विषय में

गहन रुचि है और शीघ्र ही मुझे लगा कि उनके अंदर 'जागृति' आ चुकी है। दैनिक जीवन में नित्य घटने वाली 'जागृति' के साथ वे पूर्ण समर्पण के रास्ते पर आ रहे हैं।

जब उन्होंने मुझे इस पुस्तक की हस्तलिपि को देखने का अनुरोध किया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इसे देखकर मुझे लगा कि मैंने भी 30 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा लिखी ऐसी पुस्तकें पढ़ना भी अत्यंत हर्ष की बात है जिसने सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा है।

मैने उसे अपनी शुभकामनाएं दीं जबकि वास्तव में उसे इसकी आवश्यकता ही नहीं थी। उसने कहा कि उसे मेरा आशीर्वाद चाहिए जिस पर मैंने कहा कि मेरा आशीर्वाद तो हमेशा उसके साथ है।

रमेश एस. बलसेकर
24 नवंबर, 2008

चाय के प्याले से शिक्षा

एक आध्यात्मिक जिज्ञासु जो ज्ञानोदय की खोज में था। वर्षों के पठन-पाठन और अभ्यास के बाद उसे लग रहा था कि वह पूर्णता के बहुत निकट था। तब वह एक ऐसे गुरु की खोज में निकला जो उसे सच्चा प्रबोधन दे सके। सभी ने उसे बताया कि किसी पहाड़ की चोटी पर एक प्रबुद्ध गुरु रहता है जो अपने शिष्यों को ज्ञानसंपन्न कर सकता है। वह जिज्ञासु हफ़्तों पैदल चलकर पहाड़ की चोटी पर बनी गुरु की गुफ़ा तक पहुँचा। कठिन चढ़ाई के बाद वहाँ पहुँच कर वह सीधा गुरु के चरणों पर गिर गया और उन्हें प्रबोधन की अपनी इच्छा बताई।

जिज्ञासु ने अपने पठन-पाठन, अभ्यास और अपने अब तक के अनुभवों को गुरु को बताया, और यह भी बताया कि वह अभी भी कुछ और प्राप्त करना चाहता है।

गुरु चुपचाप उसकी बात सुनते रहे। जब जिज्ञासु ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों की लंबी कहानी समाप्त की तो गुरु ने कहा कि चलो एक कप चाय पीते हैं। जिज्ञासु ने चौंक कर कहा, 'एक कप चाय! मैंने वर्षों साधना की, महीनों खोज में लगा रहा, हफ़्तों चल कर आप तक पहुँचा ताकि मुझे प्रबोधन प्राप्त

हो सके। मुझे एक कप चाय नहीं चाहिए। मैं तो मुक्त होना चाहता हूँ।'

पर फिर भी गुरु ने शांतिपूर्वक आग्रह किया कि उसके अतिथि को पहले एक कप चाय पीनी चाहिए। प्याले को जिज्ञासु के पास ज़मीन पर रख कर गुरु केतली से उसमें गर्म चाय डालने लगे। जब चाय प्याले की ऊपरी सतह तक पहुँच गई तब भी गुरु ने चाय डालना बंद नहीं किया और चाय प्लेट से निकल कर गुफ़ा के फर्श पर फैलने लगी। इस पर जिज्ञासु चिल्लाया, ''बस करो, प्याला पहले ही भरा हुआ है। अब इसमें और चाय नहीं आ सकती।'' तब गुरु ने कहा कि तुम भी इस चाय के प्याले की भाँति हो। तुम अपनी जानकारियों, अनुभवों और उपलब्धियों से इतने भरे हुए हो कि मेरे द्वारा कुछ सिखाने की जगह ही नहीं बची। जब तक तुम अपने आपको खाली नहीं कर देते तब तक मेरी शिक्षा यहाँ फर्श पर फैली चाय की तरह बर्बाद ही होगी।

जीवन को एक नए दृष्टिकोण से
देखने की चेतना

टैरट में आश्चर्यचकित कर देने वाली ''ऐस ऑफ स्वोर्ड'' स्वर्ग से लटकी दोहरी धार की तलवार के रूप में दिखायी जाती है, जिसमें उसकी चमकती धार से रोशनी की अनेक किरणें निकलती हैं। ज्ञान और बौद्धिकता का यह कार्ड आध्यात्मिक विजय और स्पष्ट सोच का प्रतीक है। यद्यपि यह आध्यात्मिक विजय मन की शांति और मुक्ति लाती है, परंतु इसके साथ ही पीड़ा भी है। इसीलिए यह दोहरी धार की तलवार है।

''ऐस ऑफ स्वोर्ड'' एक नयी शुरुआत का कार्ड है जो जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का एक तरीका है। फीनिक्स पक्षी की तरह राख से एक नया जीवन शुरू होता है। पुरानी जिंदगी से नई जिंदगी कैसे शुरू होगी? क्या यह जीवन को देखने के दृष्टिकोण को बदलने से होगा? इस परिवर्तन के लिए व्यक्ति को यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि वह जीवन से चाहता क्या है?

व्यक्ति जीवन में सबसे ज़्यादा जिस चीज़ को चाहता है, उसके लिए सबसे पहले इस बात को स्पष्टता से समझना चाहिए कि जीवन का और जीवन को जीने का आधार क्या है?

"केवल देखना ही आवश्यक करनी है।"

– रमेश बलसेकर

स्वेच्छा – दैनिक जीवन का आधार

यदि हम दैनिक जीवन के आधार पर विचार करें तो हम एक आश्चर्यजनक परिणाम पर पहुँचेंगे। विश्व के किसी भी स्थान पर अथवा किसी भी समय "दैनिक जीवन" से क्या अभिप्राय है?

ज़ाहिर है कि किसी भी क्षण में व्यक्ति जिस स्थिति से गुज़रता है, वहीं से इसका प्रारंभ होता है। किसी भी स्थिति में जो भी कदम हम उठाते हैं, साफ़ तौर पर उसका अर्थ यही निकाला जा सकता है कि हम उस पल क्या चाहते है, और उसे पाने के लिए जैसा हम सोचते है वैसा ही करते हैं।

दैनिक जीवन का यही आधार है जो कि हर व्यक्ति पर हर समय लागू होता है, चाहे वह आज के आप और मैं हों अथवा हज़ारों वर्ष पूर्व गुफ़ाओं में रहने वाले व्यक्ति हों।

भले ही परिस्थितियां बिल्कुल अलग हों, परंतु दैनिक जीवन से अभिप्राय किसी भी परिस्थिति में वही करना है जिसे करने में व्यक्ति विश्वास करता है।

जैसा कि हम दैनिक जीवन के बारे में जानते हैं कि यह घटित ही इसलिए होता है क्योंकि व्यक्ति में किसी भी परिस्थिति में उसकी सोच के अनुसार कुछ भी करने की स्वेच्छा होती है। इसलिए यह पूछना व्यर्थ है कि क्या मनुष्यों के पास स्वेच्छा होती है? यदि ऐसा नहीं होता तो दैनिक जीवन घटित नहीं होता।